



युवा चित्तेरों के बीच एक महान सर्जक

1978 में रजा पहली बार भोपाल आए। उन दिनों की स्मृति आज भी साफ और सुरक्षित है उनके पास। आज वो 2008 में तीस साल बाद फिर से भोपाल में हैं। इन तीस सालों में रजा बहुत बार भोपाल आए। कई बार निमंत्रण पर और अक्सर ही खुद से ही। उनका यह लौटना उनका अपने गृह राज्य के प्रति आकर्षण और जन्मभूमि की पुकार भी है। वे हर बार खाली हाथ आते हैं और अनेक तोहफे देकर लौटते हैं। यह तोहफे कई युवा चित्रकारों को मिले हैं। रजा का चित्रकला के प्रति समर्पण किसी से छिपा नहीं है। बाबरिया से पूरी दुनिया की यात्रा रंगों से ओत-प्रोत है। रजा की उपस्थिति समकालीन कला की घड़कन है। रजा ने उसे रंगों से संवाग और आकर्षक बनाया। आधुनिक चित्रकला को पुनर्निर्माण किया। रजा के बिना समकालीन चित्रकला में रंगों का चलन सोच पाना असम्भव है। रजा और रंग अब एक-दूसरे के पार्याय बन चुके हैं। वेन गोग ने लगभग 150 वर्ष पहले अपने भाई थियो के एक पत्र में लिखा था- 'भविष्य का चित्रकार रंगों का चित्रकार होगा।' यह भविष्यवाणी नहीं थी यह वेन गोग का अनुभव था। रजा उन बहुत ही थोड़े से कलाकारों में अग्रणी हैं, जिन्होंने रंगों के महत्व को समझा, रंगों को नई परिभाषा दी, रंगों के वर्णमाला को बढ़ाया, रंगों की स्मृतियों को पोंछ पुनः नया रूप दिया।

रजा की दूसरी बड़ी विशेषता इन पिछले तीस साल की यात्राओं में, युवा चित्रकारों से उनके गहरे को तरह सामने आती है। रजा का यह गहरे कई युवा मानस का आत्मबल है। रजा हर वर्ष आते हैं और युवकों को थका देने की हद तक युवा चित्रकारों के काम देखते हैं। उनसे बात करते हैं, उन्हें कभी सलाह देते हैं।

वे वासंती आहट लिए कमोवेश हर साल अपने वतन आते हैं। बुनौचे, इस बार भी हजरत रजा अपनी जन्मभूमि (मग) में नम्रवार हुए। रजा अपने आप में एक मौसम की मिठास हैं। विनम्र, सादगी और पारदर्शी आत्मा से मंडित एक सौम्य शख्सियत, आधुनिक कला जगत के नामचीन चित्रकार। 'पद्यश्री' से लेकर फ्रांस के 'प्रदिला-किलीक' जैसे नामी सम्मान तक फैली है उनकी यश यात्रा। फिर भी मध्यप्रदेश की अपनी जन्मभूमि के बाबरिया गँव से उन्हें आज भी गहरा लगाव है। रजा गहरे अहसासों और विराट कल्पनाओं के चित्रकार हैं। रजा की रंग सजगता, उनके चित्रों का ज्यामितीय विन्यास, रंग-अव्यात्म और भारतीय परम्परा-संस्कृति के प्रति उनकी अगाध श्रद्धा उन्हें एक ऐसे मौलिक सर्जक का ओहदा देती है, जिसकी हवाओं को पार करना फिलवत किसी चित्रकार के लिए मुश्किल ही है। रजा बेहद सरल, तरल और विरल अनुभव से भरे काव्य-संवाद का सुख देते हैं। हमने रजा की स्मृतियों को रचना-प्रक्रिया को धीरे-धीरे कुरेदा और रजा खुलते गए।

□ रजा साहब, आप कलाकृतियों में रेखाओं के लिए नहीं, रंग-अव्यात्म के लिए दुनिया भर में प्रतिष्ठित हैं। क्या यह सीमागत आपको जन्मभूमि से मिली है?

रजा : जन्म होने के बाद पहले दस साल मेरे विचार में बहुत महत्वपूर्ण हैं। इनही दस सालों में कहना चाहिए कि साग जीवन बन जाता है। दस-बाह्र सालों की जिंदगी में लगता है कि भविष्य की संरचना इसी समय होती है और बाद में हम इस बात को भूल जाते हैं। मगर फिर अगर सालों के बाद हम बचपन की ओर जाएं तो ऐसा लगता है कि जो कुछ भी इस समय हुआ है बाबरिया में, मंडला में, रंगो में, इन तेरह सालों में सारी जिंदगी बसी लगती है। जो भी आज में चित्र बना रहा है, मुझे लगता है उस जीवन का जिसको मैंने बचपन में, शुरु-शुरु में बिताया है, सम्पनिकरण (क्रिस्टलाइजेशन) है, या वह उसका फल है, उसका नतीजा है। जैसे कि एक दृष्टिकोण के बड़ने-बढ़ते बाद में उसमें फूल और फल आते हैं, उसी तरह बाद में सोटी-छोटी बात, एक नया चित्रकला पाना है।

□ आपके आधार रंग हैं लाल, नीला और पीला। हर रंग-विशेषण कई चित्रों में बढ़ती हुई नजर

कलाओं को देखने-समझने से ही जीवन सम्पूर्ण होता है



श्रियों-पुरुष कपड़े पहनते हैं-स्फेद, पीले, लाल, नारंगी मुझे इतने अच्छे लगे कि उन्हीं को देखकर चित्र बनाता था, जो कि बहुत ही रंगभरे होते थे। अब देखिए बहुत ही मुश्किल बात है कि एक रात, एक पहाड़ और उनको एक छोटे से कैनावास में रंगों के जरिए लाना और वह रंग कैसे होंगे? ऑरेंज ब्राउन, ग्रीनया हो सकता है कि पों की छत पर आ जाएं, हो सकता है कि हंगायली भी आ जाए।

□ रंगों की संगति का विचारों में बड़ा महत्व होता है। अमृत-निराद्व होकर भी रंग अपनी ठीक-ठीक संगत के लिए मानों गुहार करते हैं। आप अपनी संग्रहितता के चलते इस धारणा को किस तरह लेते हैं? शुरु में मे बहुत से रंगों का इस्तेमाल करता हूँ ताकि जिस प्रकार के जीवन को सम्पूर्णता से जीना है, रंगों को कैनावास के ऊपर भी सम्पूर्णता से

मैंने इस्तेमाल किया क्योंकि इनको समझना था चित्र बनाने-बनाने काले और स्फेद की संगति मुझे प्रिय है। इस तात्पर्य में मेरा जो पहला चित्र होगा, उसमें मैं लिलुवा-न्यो-न्यो इबत रंगों में त्यों-त्यों उज्ज्वल होया।



□ आपके भीतर एक कवि मन छिपा है। कुछ कविताएँ भी आपने लिखी हैं। क्या यह कवि मन कभी चित्रों को प्रभावित करता है?

मगर कुछ बातों में मुझे बहुत ही दिलचस्पी है। उन्हीं को लेकर मैं जीता हूँ और उन्हीं को लेकर मैं कभी-कभी चित्र बनाता हूँ और इतना ही नहीं, उनको अपने चित्रों में लिख भी देता हूँ। मेरे ख्याल से चित्रकार या कवि हमारे आज के कठिन समय के बारे में बहुत कुछ सोच सकते हैं।

□ अमृत चित्रों को समझना

मूर्धन्य चित्रकार सैयद हैदर रजा से मुलाकात

• विनय उपाध्याय

बड़ा मुश्किल होता है आम दर्शक के लिए। उधला कलाबाध अक्सर ही आड़े आता है चित्र और दर्शक के बीच। ऐसे में भला रजा के चित्रों को कैसे समझा जायेगा? लोगों को चाहिए कि चित्रों को देखें। उन्हें समझना सीखें। नया भी और पुराना

को बड़ी ही बारिकी से देखते हैं, उनसे आपका खुला और आपसी संवाद भी होता है। आप हमारे इन युवा सृजनधर्मियों से किस तरह की अपेक्षा करते हैं?

जो भारत में हो रहा है वहीं मुझे बहुत महत्वपूर्ण लगता है। मैं कहूँगा कि आज कल के भारतीय युवा कलाकार यह देखें कि भारतीय कला

एक ऐसे स्तर पर पहुँच गई है जहाँ पर वह स्वतंत्र है। अब हम लोग अंतराष्ट्रीय धारणाओं को नकार नहीं कर रहे हैं। यानी कि हमारी अभिरुचि बित्त है। उनके सिद्धांत को समझकर हम कुछ नई बात काना चाहते हैं। विनयास कॉजिंग कि जो महत्वपूर्ण

